बालमन झरोखा

छत्तीसगढ़

SCAN ME

अंक 02 माह सितम्बर वर्ष 2026

प्रधान सम्पादक: दीपिका श्रीवास्तव

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

बालमन झरोखा

बालमन बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को एक सशक्त मंच प्रदान करने वाली बाल पत्रिका पहल है। इसकी शुरुआत धीरज कुमार राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक के द्वारा टीचर्स ऑफ बिहार (Teachers of Bihar) के अंतर्गत एक जिला स्तरीय बाल पत्रिका के रूप में की गई थी। बच्चों, शिक्षकों और शिक्षा से जुड़े रचनात्मक लोगों के निरंतर सहयोग से इसका विस्तार होता गया और जिला स्तर से आगे बढ़ते हुए यह राज्य स्तर और अब राष्ट्रीय स्तर की पहल के रूप में विकसित हो चुकी है।

आज भी बालमन तथा बालमन परिवार से जुड़ी सभी सहयोगी पत्रिकाएँ टीचर्स ऑफ बिहार के अंतर्गत संचालित होती हैं। बालमन अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक ऐसा मुख्य रचनात्मक मंच (Umbrella Platform) है, जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों, जिलों, प्रखंडों एवं विद्यालयों में बच्चों की स्थानीय पत्रिकाओं को विकसित करने के लिए मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है।

बालमन परिवार की वर्तमान सहयोगी शाखाओं में–

- बालमन – मुख्य शाखा
- बालमन रेलगाड़ी – उत्तर प्रदेश
- बालमन झरोखा – छत्तीसगढ़

शामिल हैं। भविष्य में अन्य राज्यों, जिलों, प्रखंडों और विद्यालयों की बाल पत्रिकाएँ भी बालमन परिवार से जुड़कर अपनी विशिष्ट स्थानीय पहचान के साथ कार्य कर सकती हैं।

यदि आप भी अपने राज्य, जिले, प्रखंड या विद्यालय में बच्चों के लिए पत्रिका शुरू करना चाहते हैं, तो बालमन एवं टीचर्स ऑफ बिहार से जुड़कर आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

बालमन – जिला से शुरू हुई एक पहल, जो आज बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का बढ़ता हुआ राष्ट्रीय परिवार है।

एक पहल – टीचर्स ऑफ बिहार

बालमन झरोखा

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों,

बचपन सपनों, जिज्ञासाओं और कल्पनाओं से भरा जीवन का सबसे सुंदर दौर है। हर बच्चे के भीतर एक अनोखी प्रतिभा छिपी होती है, जिसे स्नेह, प्रोत्साहन और सही अवसर की आवश्यकता होती है।

'बालमन झरोखा' इसी विश्वास का एक छोटा-सा प्रयास है—बच्चों को अपनी कल्पनाओं को शब्द देने, अपनी प्रतिभा को पहचानने और अपने विचारों को सबके सामने रखने का अवसर देने का।

मेरे प्यारे बच्चों, हमेशा याद रखिए—हर बच्चा अपने आप में विशेष है। अपनी तुलना किसी और से न करें। सीखते रहें, प्रश्न पूछते रहें, गलतियों से सीखें और अपने सपनों पर विश्वास रखें।

हमारा प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से आपको ज्ञान के साथ आनंद, सीख के साथ संस्कार और कल्पना के साथ सृजन की उड़ान मिले। अपनी माटी, अपनी भाषा और अपनी संस्कृति से जुड़े रहकर आधुनिक दुनिया को समझना ही हमारी सच्ची पहचान है।

आपकी एक कविता, एक चित्र, एक कहानी या एक छोटा-सा विचार भी हमारे लिए अनमोल है।

आपके सपनों को पंख मिलें,
आपकी कल्पनाओं को आकाश मिले और
आपकी प्रतिभा को पहचान मिले—
यही 'बालमन झरोखा' की कामना है।

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित,

दीपिका श्रीवास्तव
संपादक – 'बालमन झरोखा'(सहायक शिक्षिका)
शासकीय प्राथमिक शाला हरदी
विकासखंड – बिल्हा,
जिला – बिलासपुर
(छत्तीसगढ़)

बालमन झरोखा

छत्तीसगढ़

माह सितम्बर । वर्ष 2026

संपादक मंडल

प्रधान सम्पादक

दीपिका श्रीवास्तव
(प्राथमिक शाला हरदी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़)

कवर पेज डिज़ाइनिंग

मनीष कुमार शर्मा
पी.एम. श्री राजकीयकृत बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
मनेर, पटना (बिहार)

संरक्षक

शिव कुमार (संस्थापक)
टीचर्स ऑफ बिहार
शिवेन्द्र कुमार सुमन (टेक्निकल टीम लीडर)
टीचर्स ऑफ बिहार

अनुक्रमणिका

page

1 अनमोल विचार

2 अन्तर खोजे

4 दर्शनीय स्थल

7 दिमाग लगाओ

8 अपना राज्य अपनी पहचान

11 बालमन कहानी

13 सीड बॉल से रिकॉर्ड

अनमोल विचार

तुम पानी जैसे बनो जो अपना रास्ता खुद बनाता है। पत्थर जैसे ना बनो जो दूसरों का भी रास्ता रोक लेता है।

स्वास्थ्य सुझाव

अपने भोजन में ताजे फल, हरी सब्जियां, साबुत अनाज और पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन शामिल करें। जंक फूड, अत्यधिक चीनी और नमक से दूरी बनाए रखें।

बालमन झरोखा से....

आइए अंतर खोजे

20 सेकेंड में 07 अंतर खोजे और बन जाए जीनिअस्

चित्र संख्या 01

चित्र संख्या 02

सबसे अलग हूं मैं....

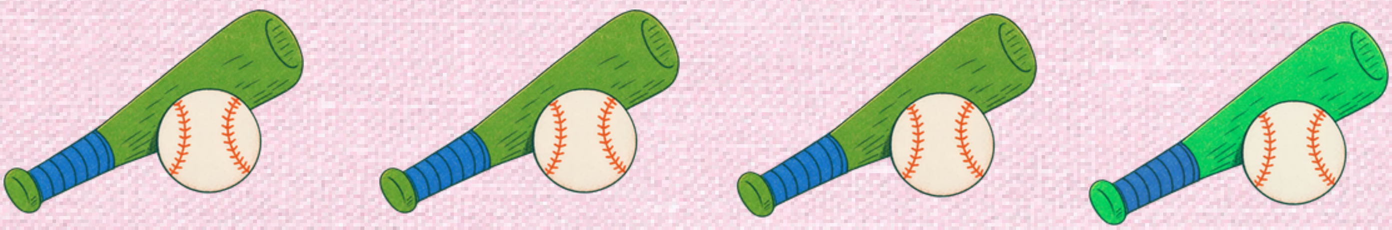

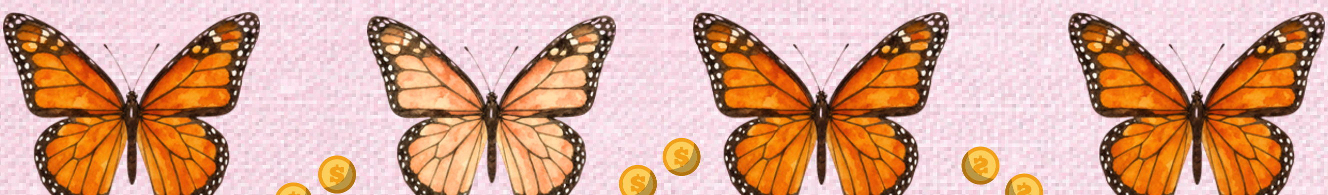

नन्हें उस्ताद की कलाकारी

बालमन झरोखा से

प्राथमिक शाला पेंड्रीडीह
विकास खंड -बिल्हा
जिला -बिलासपुर
छत्तीसगढ़

सुमन यादव
कक्षा -पांचवी
शासकीय प्राथमिक शाला हरदी
बिलासपुर

नवीन शासकीय प्राथमिक शाला
सड़क पारा
भरारी

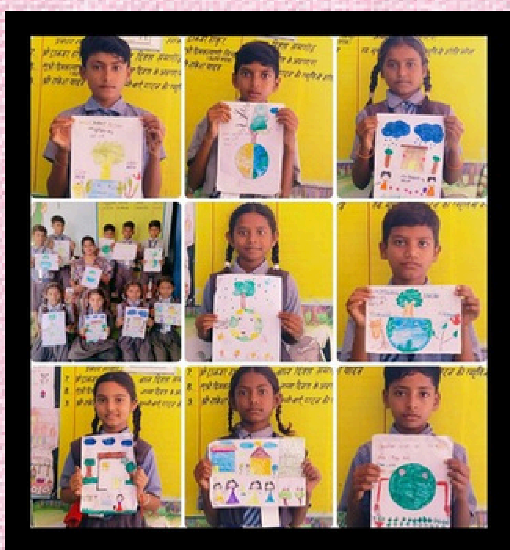

सेवा संकल्प अभियान अंतर्गत बच्चों की चित्रकारी
शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला
विकास खंड- साजा जिला -बेमेतरा

मैनपाट (छत्तीसगढ़ का शिमला)

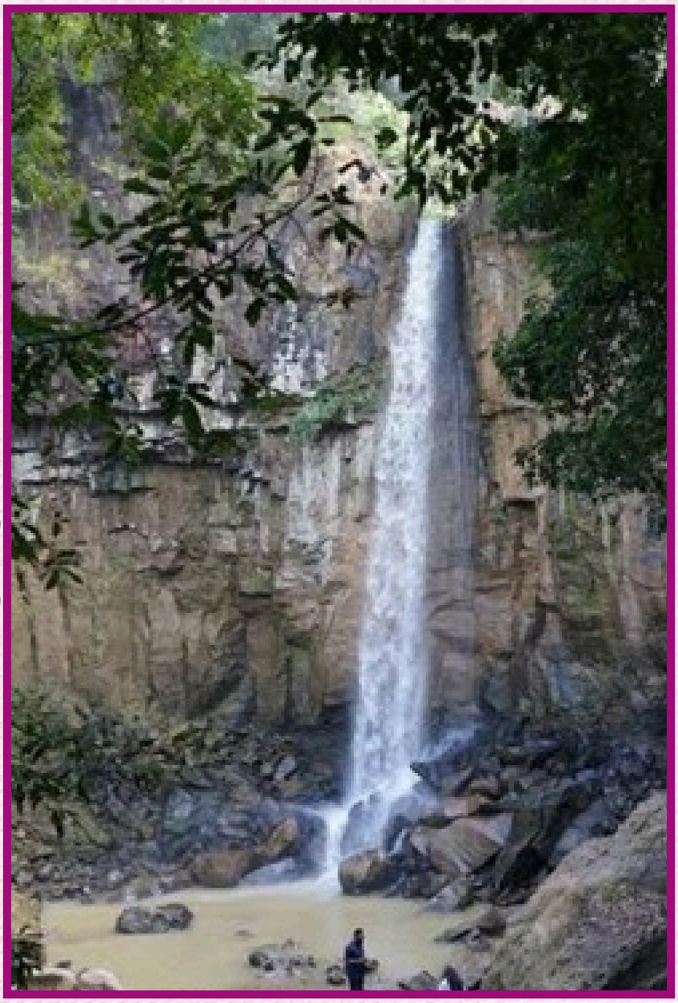

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में स्थित एक बेहद खूबसूरत और प्रसिद्ध हिल स्टेशन है, जिसे छत्तीसगढ़ का शिमला या 'छोटा तिब्बत' कहा जाता है।
मैनपाट अम्बिकापुर से 75 किलोमीटर दुरी पर है। इसे छत्तीसगढ का शिमला कहा जाता है। मैंनपाट विन्ध पर्वत माला पर स्थित है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 3781 फीट है। इसकी लम्बाई 28 किलोमीटर और चौडाई 10 से 13 किलोमीटर है।

प्राकृतिक सम्पदा से भरपुर यह एक सुन्दर स्थान है। यहां सरभंजा जल प्रपात, टाईगर प्वांइट तथा मछली प्वांइट प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। मैनपाट से ही रिहन्द एवं मांड नदी का उदगम हुआ है। मैनपाट में मेहता प्वांइट भी एक दर्शनीय स्थल है। इसे छत्तीसगढ का तिब्बत भी कहा जाता हैं। यहां तिब्बती लोगों का जीवन एवं बौध मंदिर आकर्षण का केन्द्र है। यहांयह कालीन और पामेरियन कुत्तो के लिये प्रसिद्ध है। पर एक सैनिक स्कूल भी प्रस्तावित है।

DHIRAJ KUMAR

बालमन झरोखा से.....

खूबसूरत तस्वीरें

चांदनी और संध्या
प्राथमिक शाला लछनपुर

शासकीय प्राथमिक शाला
हरदी
जिला बिलासपुर

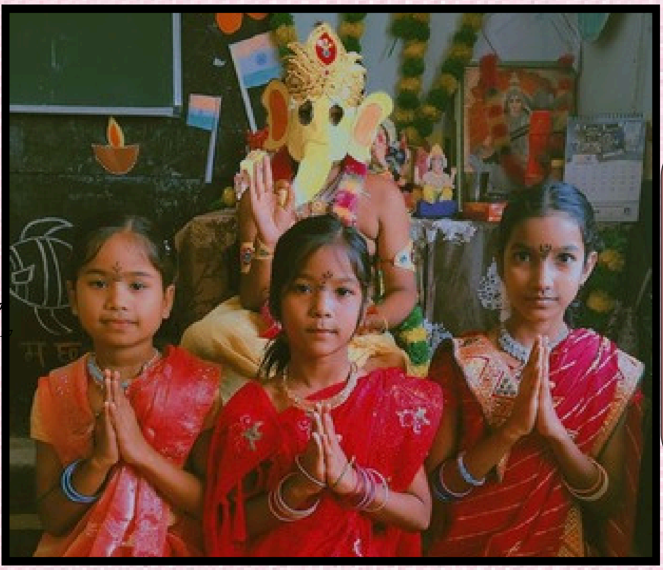

शासकीय प्राथमिक शाला मुधा
संकुल जम्हारी
विकासखंड सरायपाली
जिला महासमुन्द

बदलता और बढ़ता प्राथमिक शाला

प्राथमिक शाला हरदी ,बिलासपुर

शाला सुरक्षा कार्यक्रम में आज शारीरिक दंड विषय पर बच्चों को जानकारियां प्रदान की गई। (शास.प्राथ.शाला नयापारा गोंदईया)

चंद्रमा कक्षा तीसरी
प्राथमिक शाला लछनपुर

PS PENDARIDIH

बालमन झरोखा से

दिमाग लगाओ

ऐसी कौन-सी चीज है जो समुद्र में पैदा होती है और आपके घर में रहती है?

प्यास लगे तो पी सकते हैं, भूख लगे तो खा सकते हैं और ठंड लगे तो जला भी सकते हैं। बोलो क्या है वह?

बालमन झरोखा से...

सामान्य ज्ञान प्रश्न

अपना राज्य अपनी पहचान

प्रश्न 1: छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना कब हुई थी?

प्रश्न 2: छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम क्या है?

प्रश्न 3 :छत्तीसगढ़ का राजकीय पशु कौन सा है?

प्रश्न 4: छत्तीसगढ़ का राजकीय पक्षी कौन सा है?

प्रश्न 5: छत्तीसगढ़ की गंगा किस नदी को कहा जाता है?

सही उत्तर : (1)1 नवंबर 2000 (2)दक्षिण कोशल (3)वन भैंसा (4)पहाड़ी मैना (5) महानदी

बालमन कविता

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया कितनी प्यारी
सुन्दर -सुन्दर, न्यारी -न्यारी

काले -काले घूँघराले बाल
मतवाली हैं इसकी चाल

ख़ूब मटककर चलती हैं
नटखट यह दिखती हैं

गर्दन ख़ूब मटकाती हैं
अपनी धुन में इतराती हैं

मेरी गुड़िया......
सुन्दर -सुन्दर.....

गुड़िया हैं मेरी सखी सहेली
छोड़ती नहीं मुझे अकेली

जहाँ -जहाँ मैं जाती हूँ
संग मेरे हो लेती हैं

दोनों ख़ूब मस्ती करते
हँसी ख़ुशी से समय बिताते

मेरी गुड़िया....
सुन्दर -सुन्दर..

लीलम पटेल ,कक्षा-5वीं
शास. प्राथ. शाला अकोला
विकास खंड -साजा
जिला- बेमेतरा (छ.ग.)

बालमन कविता

सपनों की उड़ान

सपनों की उड़ान, छू लू आसमान
रूकावटे आए तो, हौसलों की डोर थाम लू

नई तरंगे, नई उम्मीदें, सपनों में उड़ान भर जायेगा।
जीवन का हर सफर बन जाएगा खुशनुमा,
हर मुश्किल आसान हो जायेगा।

तलाश करो मंजिल की, लक्ष्य पर ध्यान करो।
मन की आवाज सुनो, चुनौतियों को पार करो।

संघर्ष कर आगे बढ़, आराम करना छोड़ दे।
हार को जीत में बदल दे, जग में रहकर कुछ नाम कर।

हारा नहीं हैं तू, बस गहरी चोट खाई हैं।
हिम्मत रख मजबूत बन, तभी तो कुछ
अलग कर पायेगा।

उठ मुसाफिर आगे बढ़, मंजिल तक पहुंचना हैं।
रख हौसला, लम्बी उड़ान भरना हैं।

इरादों में दम हो तो, मंजिल भी मिल जायेगा।
हाथ बांधे रहे तो, हासिल कुछ न हो पायेगा।

तू गिर, उठ, संभल कर चल
तभी तो सपना साकार कर पायेगा।
मुलमंत्र यही हैं जीवन का तभी सपनों में उड़ान भर पायेगा।

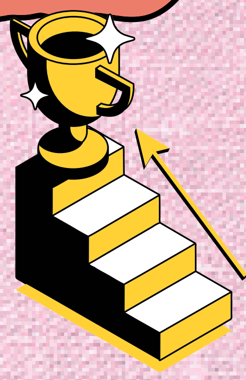

रचनाकार
हिमकल्याणी सिन्हा
प्रधानपाठक
शास. प्राथ. शाला -अकोला
जिला- बेमेतरा (छ.ग.)

कहानी का शीर्षक-झूला

एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे। उनके पास एक काले रंग का चौड़ा-सा टायर था। दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे। बबली बोली कि वह टायर कितना अच्छा लगता है। जीत बोला कि उसे तो झूले पर मजा आता है। यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा। जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई। दोनों मिलकर झूला ढूँढने लगे। दोनों ने दूर-दूर तक झूला ढूंढा। पर झूला कहीं नहीं मिला। वे सोचने लगे कि क्या करें। उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे। कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं। दोनों को एक तरकीब सूझी। जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे दोनों को खूब मजा आया। लेकिन वे ज्यादा देर तक नहीं झूल पाए। बबली के दोनों हाथ छिल गए थे। जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी. दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए। वहीं एक लोहे का पाइप लगा हुआ था। बबली की नजर उस पाइप पर पड़ी। उसने जीत को वह पाइप दिखाया। जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए। दोनों को खूब मजा आया। लेकिन जीत और बबली भी देर झूल नहीं पाए। दोनों के हाथ में दर्द होने लगा। बबली को एक और तरकीब सूझी। उसने एक टायर को जोर से उछाला, टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया। जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया। वह उछलकर टायर में बैठ गया। बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।

हिमकल्याणी सिन्हा, प्रधान पाठक
प्रा. शा. आश्रम- अकोला, वि. ख. ...
जिला- ...

बालमन झरोखा

एक नज़र इधर भी देखे

शासकीय प्राथमिक शाला मुधा ,संकुल जम्हारी
विकासखंड सरायपाली , जिला महासमुन्द

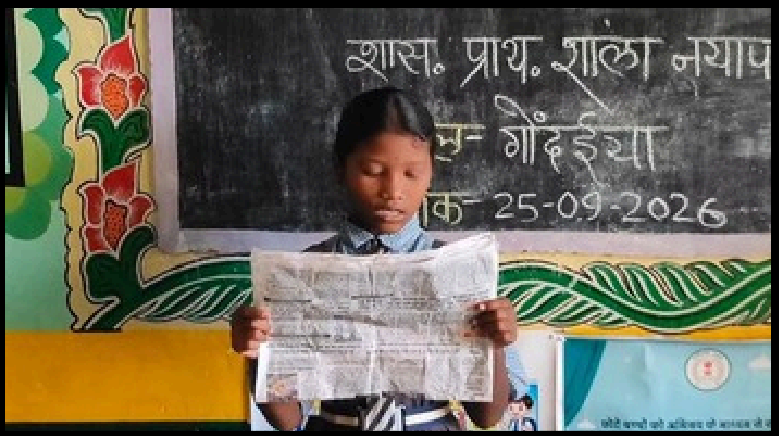

प्रतिदिन ज्ञान सभा के दौरान समाचार पत्र का वाचन
शासकीय प्राथमिक शाला नयापारा गोंदईया

स्वच्छ भारत
प्राथमिक शाला लछनपुर

शासकीय प्राथमिक शाला हरदी
बिलासपुर

Ek ped Maa ke naam ,eco club
PS PENDARIDIH

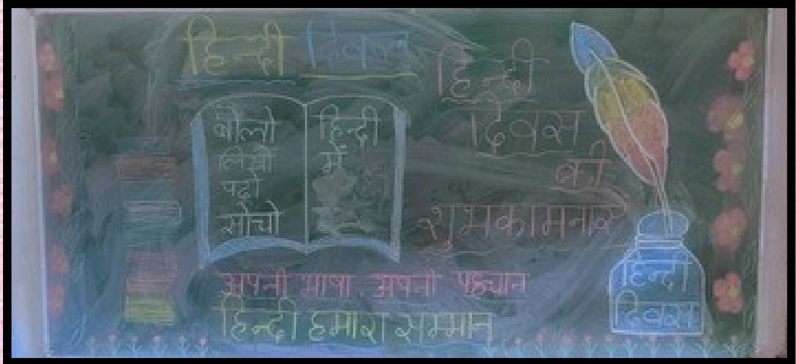

पोला पर्व में बच्चे मिट्टी से खिलौना बनाएं
नवीन शासकीय प्राथमिक शाला सड़क पारा
भरारी

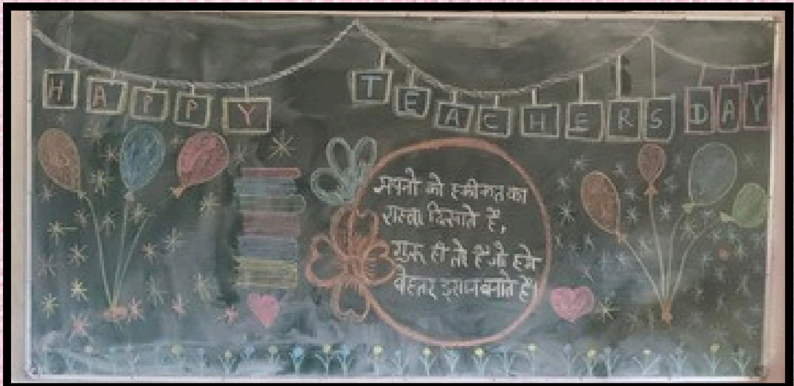

शासकीय प्राथमिक शाला हरदी बिलासपुर

सीड बॉल से रिकॉर्ड

श्री कलेश्वर साहू

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ बिलासपुर के शिक्षक कलेश्वर साहू का नाम : 2. 70 लाख सीड बॉल बनाकर रचा इतिहास

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड का आधिकारिक प्रमाण पत्र और मेडल से सम्मानित किया

बिलासपुर जिले ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक नया ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया है। जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा में पदस्थ शिक्षक कलेश्वर साहू ने अपनी निष्ठा और अथक परिश्रम से 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराया है। साहू ने ग्रीष्मकालीन अवकाश और स्कूल समय के बाद अतिरिक्त समय निकालकर 3 माह में 2.70 लाख सीड बॉल तैयार किए, जिसे विश्व रिकॉर्ड के रूप में आधिकारिक मान्यता मिली है। इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए उप मुख्यमंत्री अरुण साव द्वारा शिक्षक कलेश्वर साहू को 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' का आधिकारिक प्रमाण पत्र और मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस विशेष अवसर पर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की राज्य प्रभारी सोनल राजेश शर्मा भी उपस्थित थी।

शिक्षक कलेश्वर साहू ने अध्यापन कार्य के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति अपने सामाजिक दायित्व का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया है। उन्होंने बिना किसी व्यावसायिक स्वार्थ के व्यक्तिगत प्रयासों से लाखों बीजों को सुरक्षित कर सीड बॉल का रूप दिया, ताकि पौधरोपण को बढ़ावा दिया जा सके। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने शिक्षक की इस सफलता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके समर्पण की सराहना करते हुए उन्हें पीठ थपथपाकर कर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि कलेश्वर साहू का यह कार्य न केवल बिलासपुर जिले बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। सरकारी सेवा के साथ पर्यावरण के क्षेत्र में ऐसा असाधारण योगदान पूरे समाज के लिए अनुकरणीय है और यह लोगों को पर्यावरण संरक्षण अभियान से जुड़ने के लिए सदैव प्रेरित करेगा।

बालमन झरोखा

अपनी संस्कृति
अपनी परम्परा

पोरा तिहार

शासकीय प्राथमिक शाला हरदी में पोला तिहार का आयोजन किया गया जिसमें पारंपरिक रूप से नान्दीबैला चुकिया एवं पोरा का छात्र-छात्राओं ने पूजा अर्चना किया शिक्षिका दीपिका श्रीवास्तव ने इस अवसर पर बच्चों को बताया कि छत्तीसगढ़ में हम लोग पोला तिहार क्यों मनाते हैं ?

उन्होंने बताया कि किसी भी राज्य की पहचान उसकी अपनी संस्कृति उसके अपने लोक पर्व से होती है हम सभी छत्तीसगढ़ में रहते हैं और छत्तीसगढ़ मुख्य रूप से कृषि आधारित राज्य है । जहां किसान अपने खेत में जुताई के लिए बैलों को हल में फान्द कर खेत की जुताई करते हैं और उस पर धान बीज बोते हैं । भादो मास की अमावस्या तिथि को पोरा तिहार मनाया जाता है जो खरीफ फसल का यह द्वितीय चरण होता है अर्थात अब तक निंदाई और बुवाई का कार्य पूर्ण कर लिया जाता है ऐसा माना जाता है कि इस दिन अन्न माता गर्भ धारण करती हैं धान की फसल तैयार होना प्रारंभ हो जाती है इस दिन को छत्तीसगढ़ के किसान पोरा तिहार के रूप में पूरे राज्य में मनाते हैं यह दिन कहीं ना कहीं अपनी मिट्टी से जुड़ने और पशुधन के प्रति सम्मान का प्रतीक है बैलों को नहला धुलाकर सजाकर उनकी पूजा की जाती है घरों में प्रतीक चिन्ह के रूप में मिट्टी से बने बैल चुकिया तथा रसोई में प्रयुक्त होने वाले मिट्टी के बर्तनों के खिलौने और पोरा को विधिवत पूजा अर्चना उन पर छत्तीसगढ़ी व्यंजन चीला, अनरसा, ठेठरी ,खुरमी ,भजिया इत्यादि का भोग लगाया जाता है। पोरा तिहार के छत्तीसगढ़ के पर्यावरण एवं प्रकृति से किस तरह से निकटता है मानव जीवन और पशुधन की आवश्यकता बच्चों को समझाया विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने बहुत ही हर्ष और उल्लास के साथ विद्यालय में पूजा अर्चना की इस अवसर पर शाला के शिक्षक श्रीमती लक्ष्मी कौशिक एवं श्री माघेलाल मरावी ने सभी छात्र-छात्राओं को अपनी ओर से पोरा तिहार की शुभकामनाएं दी ।

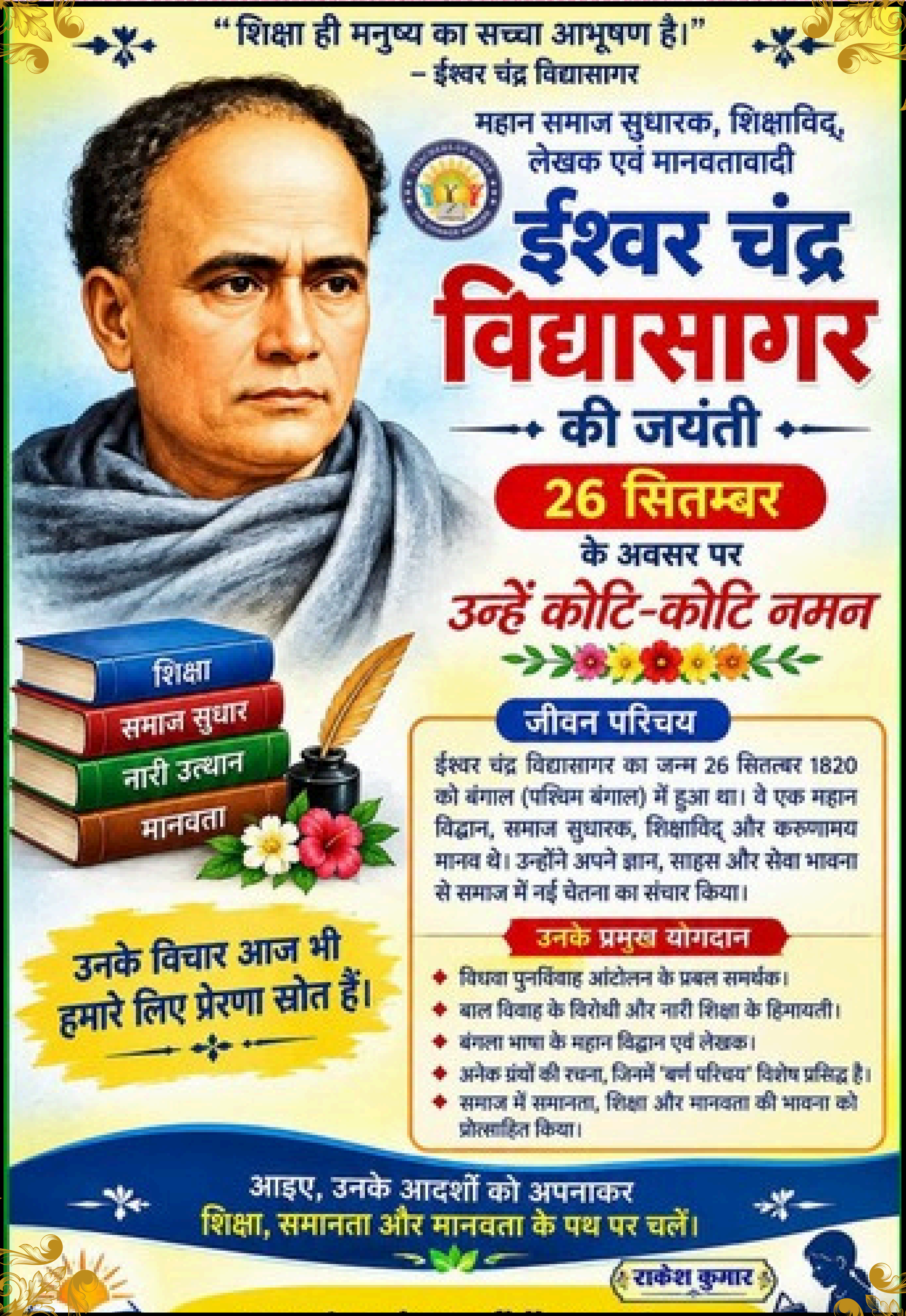

"शिक्षा ही मनुष्य का सच्चा आभूषण है।"
– ईश्वर चंद्र विद्यासागर
महान समाज सुधारक, शिक्षाविद्,
लेखक एवं मानवतावादी
ईश्वर चंद्र
विद्यासागर
की जयंती
26 सितम्बर
के अवसर पर
उन्हें कोटि-कोटि नमन
शिक्षा
समाज सुधार
नारी उत्थान
मानवता
जीवन परिचय
ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जन्म 26 सितम्बर 1820 को बंगाल (पश्चिम बंगाल) में हुआ था। वे एक महान विद्वान, समाज सुधारक, शिक्षाविद् और करुणामय मानव थे। उन्होंने अपने ज्ञान, साहस और सेवा भावना से समाज में नई चेतना का संचार किया।
उनके प्रमुख योगदान
विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के प्रबल समर्थक।
बाल विवाह के विरोधी और नारी शिक्षा के हिमायती।
बंगला भाषा के महान विद्वान एवं लेखक।
अनेक ग्रंथों की रचना, जिनमें 'वर्ण परिचय' विशेष प्रसिद्ध है।
समाज में समानता, शिक्षा और मानवता की भावना को प्रोत्साहित किया।
उनके विचार आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं।
आइए, उनके आदर्शों को अपनाकर
शिक्षा, समानता और मानवता के पथ पर चलें।
राकेश कुमार

बालमन झरोखा

TEACHERS OF BIHAR THE CHANGE MAKERS

हर तस्वीर कुछ कहती है....

शाला सुरक्षा कार्यक्रम अंतर्गत सुरक्षित शनिवार में जंगली जानवरों से बचाव के संबंध में जानकारी देते हुए शासकीय प्राथमिक शाला नयापारा गोंदईया संकुल गोंदईया विकासखंड बिल्हा जिला बिलासपुर

विकास खंड स्तरीय कहानी उत्सव कहानी -Sparrowचिड़िया(रोल प्ले) शासकीय प्राथमिक शाला -अकोला विकास खंड- साजा जिला- बेमेतरा

रोचक जानकारी

शिक्षा शब्दकोश - मचान

शिक्षा में मचान (Scaffolding) का अर्थ है—शिक्षक द्वारा विद्यार्थी को किसी कार्य या अवधारणा को सीखने में अस्थायी सहायता, मार्गदर्शन और संकेत देना, ताकि विद्यार्थी धीरे-धीरे स्वयं उस कार्य को करने में सक्षम हो सके। यदि विद्यार्थी कोई गणित का प्रश्न स्वयं हल नहीं कर पा रहा है, तो शिक्षक पहले संकेत या चरण बताता है। विद्यार्थी समझने के बाद जब स्वयं प्रश्न हल करने लगता है, तो शिक्षक सहायता कम कर देता है। यह अवधारणा वाइगोत्स्की (Vygotsky) के निकटस्थ विकास क्षेत्र (ZPD) से संबंधित है।

बालमन झरोखा

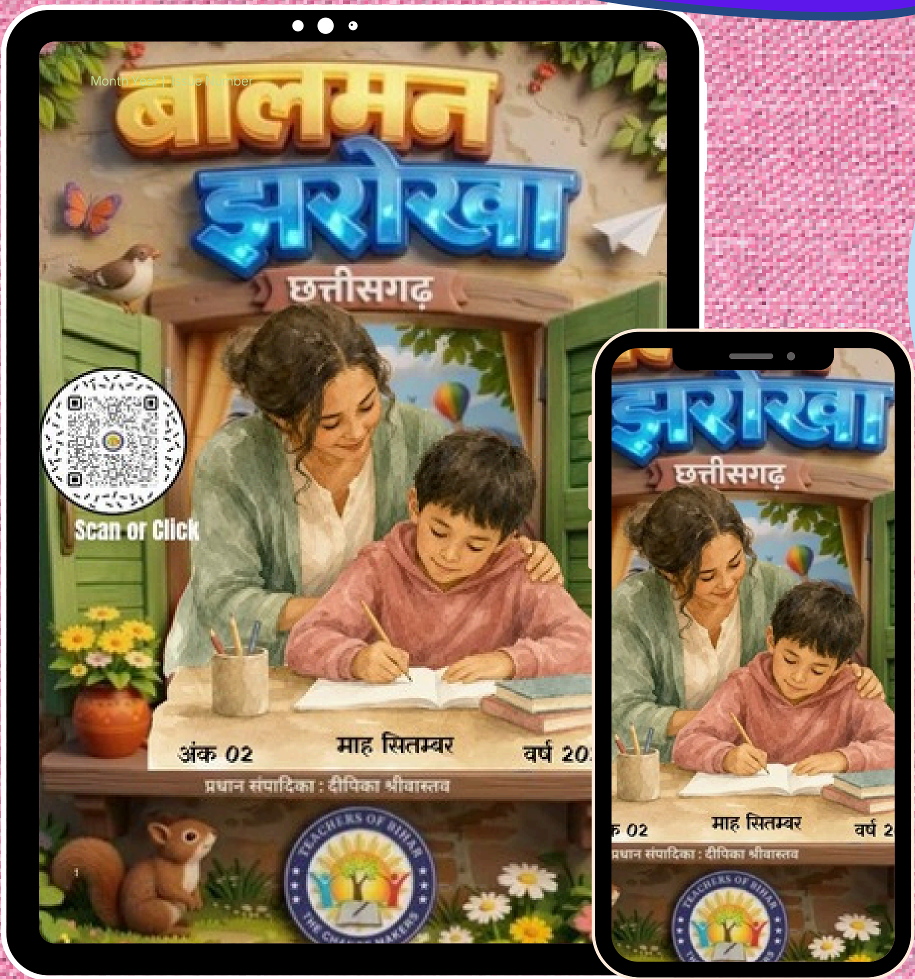

पत्रिका के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए दिए गए आईकॉन पर क्लिक करे।

आपको यह अंक अच्छा लगे तो अधिक से अधिक राज्य के अन्य प्राथमिक/मध्य/उच्च शाला तक शेयर करे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे

78793 87284 7250818080

www.teachersofbihar.com